दुआ-62

दुआए रोज़े यकशम्बा - एतवार

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

उस अल्लाह के नाम से मदद मांगता हूं जिसके फ़ज़्ल व करम ही का उम्मीदवार हूं और जिसके अद्ल ही से डरता हूँ! उसी की बात पर मुझे भरोसा है और उसी की रस्सी से वाबस्ता हूं। ऐ अफ़ो व ख़ुशनूदी के मालिक! मैं तुझसे ज़ुल्म व जौर, ज़माने के इन्क़ेलाबात, ग़मों के पैहम हूजूम और नाज़िल होने वाली मुसीबतों से पनाह मांगता हूं और इस बात से के आख़ेरत का साज़ व सामान और ज़ादे राह मुहय्या करने से पहले ही मुद्दते हयात ख़त्म हो जाए और तुझ ही से उन चीज़ों की रहनुमाई चाहता हूं जिन में अपनी बहबूदी और दूसरों की फ़लाह व दुरूस्तगी का सामान हो और मैं तुझ से ही मुकम्मल सेहत व तंदरुस्ती कि तमन्ना रखता हूँ के जिस में हमेशा कि सलामती भी शामिल हो! या अल्लाह मैं शैतानी वसूसों से तेरी पनाह चाहता हूँ, बस मेरी नमाज़ें और रोज़े जैसे भी हैं इन्हें क़बूल फरमा! कल का दिन और इस से अगले वक़्त को मेरे आज के दिन और इस घड़ी से बेहतर बना दे, और क़ौम में इज़्ज़त आता फ़र्मा, ख़वाब और बेदारी में हर हालत में मेरी हिफाज़त फर्मा, ऐ अल्लाह तू बेहतरीन निगहबान है और सबसे ज़यादा रहम करने वाला है! ऐ अल्लाह मैं तेरे हुज़ूर में आज के दिन और इस से अगले इतवार के दिनों में शिर्क व बे'दिनी से बरी हूँ और ख़ुलूस के साथ तुझ से दुआ करता हूँ के क़बूल हो जाए और मैं सवाब कि उम्मीद पर तेरी अता'अत पर क़ाएम हूँ, बस तू बेहतरीन मख्लूक़ और हक़ के रखवाले मोहम्मद मुस्तफ़ा पर रहमत नाज़िल फ़र्मा और अपनी इज़्ज़त के सड़के मुझे वोह इज़्ज़त दे जिस में ज़ुल्म न हो, अपनी ना सोने वाली आँख से मेरी निगहबानी फ़र्मा, मेरा ख़ात्मा यूँ हो कि तुझी से उम्मीद लगाये रखूं और मेरी ज़िंदगी को बख्शीश पर तमाम कर दे! बेशक तू बख्शने वाले मेहरबान है!